International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 12 Issue 9 || September 2023 || PP. 233-236

श्री
काव्य संग्रह : साहित्य सुगंध
कवि के अन्तर्मन का सौन्दर्य
(अकविता और अगीत आन्दोलनों के सन्दर्भ में)

डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा
प्रोफेसर
राजकीय महाविद्यालय,टोंक (राज॰)

राजस्थान का टोंक जिला अपनी साहित्यिक और सांस्कृतिक अस्मिता की दृष्टि से एक अलग ही पहचान रखता है। गंगा यमुना–सरस्वती की त्रिवेणी यहाँ के सामाजिक सांस्कृतिक जीवन की एक प्रमुख विशेषता है। यहाँ की धरती ने एक से बढ़कर एक उत्कृष्ट व नायाब साहित्यकारों, कवियों और शायरों को जन्म दिया है। जिन्होंनें राष्ट्रीय अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी व्यापक पहचान स्थापित की है। कहना न होगा कि कवि श्री प्रदीप पंवार भी इसी प्रकार की एक पहचान और व्यक्तित्व हैं, जिन्होंनें अपनी बहुमुखी प्रतिभा के बल पर एक उच्चकोटि के मंच संचालक, और श्रेष्ठ कवि के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान कायम की है। भारत के विभिन्न प्रदेशों, राज्यों और विभिन्न टी.वी. चैनलों में समय–समय पर आयोजित हुए विभिन्न कवि सम्मेलनों, मुशायरों आदि में बार–बार आपको आमंत्रित किया जाना और तत्सम्बन्धी योगदान के लिए जिला प्रशासन के साथ–साथ विभिन्न राज्य संस्थानों, राष्ट्रीय संगठनों तथा भारत सरकार द्वारा आपको पुरस्कृत व सम्मानित किया जाना इसी बात का प्रमाण है जो आपकी व्यापक पहचान को प्रकट करता है।

कवि श्री प्रदीप पंवार के प्रकाशित काव्य संग्रह 'साहित्य सुगंध' जिसका विमोचन स्वयं राजस्थान के राज्यपाल महोदय के कर कमलों द्वारा किया के विषय में कुछ कहने से पहले हमें एक बात और ध्यान रखनी चाहिए कि साहित्यिक परम्पराओं में जो उक्ति प्रचलित है 'कवि पैदा होते हैं बनाये नहीं जाते' श्री प्रदीप पंवार पर अक्षरशः चरितार्थ होती है। क्योंकि उनके शैक्षणिक जीवन पर दृष्टि डाली जाए तो ज्ञात होगा कि वे वाणिज्य विषय के उत्कृष्ट विद्यार्थी रहे हैं, जिसका साहित्यिक अध्ययन की परम्पराओं से प्रायः सम्बन्ध नहीं होता है। किन्तु यहाँ महत्त्वपूर्ण बात यह भी है कि काव्य की दैवीय प्रतिभा आप में जन्मजात व वंशानुगत रूप से विद्यमान रही है, जो समयानुसार पल्लवित और पुष्पित होती गई जिसका परिणाम रचनाकार के काव्य संग्रह 'साहित्य सुगंध' के रूप में आज पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है। कालान्तर में अपनी इसी रुचि और प्रतिभा के बल पर आपने हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर की उपाधि भी प्राप्त की।

वैसे तो कवि प्रदीप की रचनाओं की संख्या बहुत अधिक है, प्रकाशकीय सीमाओं के कारण एक छोटे आकार के काव्य संग्रह में उन सभी को समेटना संभव नहीं रहा है। प्रस्तुत संग्रह में उनकी जो कविताएँ संग्रहित की गई हैं वे परम्परित परिवेश अर्थात् हमारी सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक और समकालीन विद्रूपताओं को एक नये अंदाज के साथ प्रकट करती हैं। जिनका अब तक की काव्य परम्पराओं में विशेषतः नई कविता और उसके बाद विकसित होने वाले छिट–पुट काव्यान्दोंलनों में प्रायः अभाव रहा है। साथ ही यह भी उल्लेखनीय है कि संकलन में इस प्रकार की विद्रूपताओं को प्रकट करने वाली रचनाओं के साथ–साथ उत्साह, जोश और राष्ट्रीय चेतना से परिपूर्ण काव्य रचनाओं के साथ हास्य व्यंग्य की रचनाओं को भी स्थान दिया गया है, जिससे प्रस्तुत संग्रह एक साथ बहुआयामी विषयों को समेटते हुए पाठकों के हर वर्ग को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। यह इस काव्य संग्रह की एक बड़ी और महत्त्वपूर्ण विशेषता मानी जा सकती है।

सामाजिक अव्यवस्था, विसंगतियाँ, मूल्यहीनता, सामाजिक विरोधाभास, और आदर्शों का पतन तथा समाप्त हुए पारिवारिक मानवीय मूल्यों के प्रति गहरी संवेदना और उनके प्रति कटाक्षात्मक अभिव्यक्ति इस काव्य संग्रह की ऐसी प्राणभूत विशेषता है जो कवि को मूर्धन्य रचनाकारों की श्रेणी में ला खड़ा करती है।

यों देखा जाए तो विषय बिन्दुओं की दृष्टि से ये बातें सतही तौर पर सामान्य और परम्परित ही नजर आती हैं, किन्तु रचनाओं के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि इनके पीछे रचनाकार ने भाव संवेदना और शैली दोनों ही दृष्टियों से अनायास ही एक नई परम्परा का सूत्रपात कर दिया है। संग्रह की ये रचनाएँ परम्परागत विषयों से सम्बद्ध होते हुए भी इन रचनाओं के सन्दर्भ जीवन के उन अनछुए पहलुओं को पकड़तें हैं जिन पर अभी तक किसी का ध्यान नहीं गया और

जो हमारे रोजमर्रा के जीवन का महत्त्वपूर्ण और अभिन्न अँग हैं। संग्रह की रचनाओं 'सफाई सैनिक', 'नर्स', 'बिटिया और कन्यादान' जैसी कविताओं में रचनाकार की नई दृष्टि अपनी पूरी संवेदना के साथ प्रकट होती है।

'सफाई सैनिक' कविता में रचनाकार ने एक सफाई कर्मचारी के जीवन की भयंकर विसंगतियों, उसके जीवन की विद्रूपताओं और उनके बीच उसकी संघर्षशीलता को अत्यंत गहरी संवेदना से बिल्कुल सीधी लोक प्रचलित शब्दावली में व्यक्त किया है जो सहज ही में पाठक के हृदय को द्रवित कर करूण रस की अनुभूति करवाती है और पाठक को इस सम्पूर्ण वर्ग के विषय में सोचने पर विवश करती हैः–

''नाली व नालों के पास ही जिसका बचपन रोता है,
गंदगी से रोज युद्ध में जिसका जीवन खोता है।
जिसकी जवानी संघर्षों की नई कहानी होती है,
वृद्धावस्था केवल; कल की चिंताओं में खोती है।
सारा जीवन त्याग तपस्या फिर भी वो गुमनाम है,
ऐसे सफाई सैनिक को भारत ने किया सलाम है।

'नर्स' कविता में चिकित्सा कर्म के रूप में रोगी की सेवा–शुश्रूषा कर उसे आरोग्य प्रदान करने वाली उस परिचारिका के जीवन के महत्त्व को रचनाकार ने स्पष्ट किया है जिसकी सेवा प्रक्रिया को हम जानते हुए भी उससे अनजान बने रहते हैं। और उसके महत्त्व को अनदेखा करते रहते हैं। प्रस्तुत रचना में कवि ने 'नर्स' के उसी व्यापक किरदार को व्यक्त करते हुए उसके सम्मुख नतमस्तक होकर उसके सम्मान के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त किया है। जो मानव समुदाय को भी एक नई प्रेरणा देकर उसके महत्त्व को सोचने के लिए बाध्य करती है। इसीलिए रचनाकार का मानना है किः–

'नर्स' शब्द चाहे छोटा हो, पर वह बहुत बड़ा किरदार है,
जिसकी सेवा समर्पण पर नतमस्तक संसार है'।

'बिटिया और कन्यादान' रचना में पुत्री के विभिन्न रूपों का परिचय देते हुए उसके वैवाहिक अवसर पर किये जाने वाले 'कन्यादान' की रस्म को एक नई दृष्टि से देखा गया है। रचनाकार का मानना है कि बिटिया दान की वस्तु नहीं है, क्योंकि दान की गई वस्तु को दाता पुनः प्राप्त नहीं कर सकता। बल्कि बिटया तो दो परिवारों और वंशों को जोड़ने का काम करती है, उनके मध्य वह उस प्रेम सेतु का निर्माण करती है जिससे दो परिवारों का भविष्य निर्धारण भी होता है। इसीलिए कवि कहता है कि : –

यदि कन्यादान भी ओर दान जैसा ही है तो,
हम आत्मा का दान कैसे कर सकते हैं,
कैसे जिगर के टुकड़े को कुर्बान कर दें,
बेटी वस्तु नहीं जिसे दान कर दें।

इसीलिए प्रेरणा देते हुए रचनाकार संदेश देता हैः–

आप सबसे करबद्ध प्रार्थना है,
अपनी बेटियों को अपने से ना कभी जुदा कीजिए,
उन्हें दान नहीं बस विदा कीजिए।

'साहित्य सुगंध' में संग्रहित अन्य रचनाओं के विषय में बात की जाए तो कहा जा सकता है कि उन रचनाओं में भी कवि की व्यापक दृष्टि और सोच प्रसारित होती दिखाई देती है। चूंकि रचनाकार स्वयं राजस्थान की गौरवपूर्ण धरती से जुड़ा हुआ है अतः यहाँ की आन–बान–शान और स्वाभीमान की प्रवृत्ति के साथ यहाँ का स्वतन्त्रता प्रेम भी उसकी रग–रग में समाया हुआ है। अपने इस व्यापक जोश, उत्साह और राष्ट्रीय चेतना के भावों को कवि ने 'रणबाँकुरा राजस्थान', 'महाराणा प्रताप', 'सरहद के सुलतान', 'मैं भारत माँ का बेटा हूँ' और 'ये शहीदों का चमन है' जैसी रचनाओं में अत्यंत सहज और सुन्दर तरीके से व्यक्त किया है। ये कविताएँ पाठक में सहज ही वीर रस का संचार करने मे समर्थ होती हैं। राजस्थान के विषय में कवि का मानना है कि :–

यहाँ दुर्ग दुर्ग में दुर्गा है, कण–कण में रची कहानी है,
रग–रग में रमी रवानी है, जांबाजी भरी जवानी है।
आओ इसको करें नमन ये धरती राजस्थानी है।

राणा प्रताप के विषय में कवि का मानना है कि वे पूरे मेवाड़ के मानचित्र का प्रतीक हैं। कवि का कहना है कि :–

सांगा जी के पौत्र बने, महाराणा प्रताप
उदय सिंह के पुत्र बने महाराणा प्रताप
माँ जयवन्ता के लाडले, सिसोदिया कुलनाम
मेवाड़ के मानचित्र बने महाराणा प्रताप

वीरता, जोश, उत्साह और राष्ट्रीय भावों का जागरण करने वाली रचनाओं के अतिरिक्त भी प्रस्तुत काव्य संग्रह में और भी बहुत कुछ है, जिसकी पूर्ण समीक्षा यहाँ सम्भव नहीं है। किन्तु यह तो बताना ही होगा कि प्रस्तुत संग्रह में कवि की पैनी, प्रखर, कटाक्षात्मक दृष्टि यहाँ पूरी तरह मुखरित है। संग्रह की 'प्यासी नदी में नाव चलाने आए हैं', 'छोटी–छोटी गलियाँ बड़ी–बड़ी कारें', 'कौन त्रस्त है कौन मस्त है', 'डिस्पोजेबल ग्लॉस' जैसी रचनाओं में कवि की इस दृष्टि को आसानी से समझा जा सकता है। 'प्यासी नदी में नाव चलाने आए हैं' रचना में जब रचनाकार यह लिखता हैः–

हम गौरवान्वित कर चुके हैं पेट्रोल को
अब डीजल का मान बढ़ाने आए हैं,
लूट चुके हैं आटा तेल और शक्कर को
आग रसोई में भी लगाने आए हैं।
मुँह का निवाला तो पहले ही छीन चुके
बेघर तुझको आज बनाने आये हैं। ''

तो निश्चित् रूप से मँहगाई के सारे आयामो को एक साथ प्रकट कर आम जन की मँहगाई से उत्पन्न पीड़ा को बारीकी से व्यक्त कर देता है।

आज का मनुष्य किस प्रकार एक दूसरे पर अपना नियंत्रण रखना चाहता है, किन्तु अपनी वास्तविक सत्यता को न सुनकर केवल अपनी हाँ में हाँ मिलवाना चाहता है। यह मनोवृत्ति भी रचनाकार की पैनी दृष्टि से बच नहीं पाती और उसे लिखना पड़ता हैः–

बस तू हमारी हाँ में हाँ मिलाता चल
वरना तुझको कैद कराने आए हैं।

आज का मध्यवर्गीय जीवन कितना दिखावे से परिपूर्ण हो गया है, मानवीय सम्बन्धों का स्थान आर्थिक हैसियत ने ले लिया है। 'छोटी–छोटी गलियाँ बड़ी बड़ी कारें' इस व्यंग्य को प्रकट करती है। यह रचना पूरी तरह प्रतीकात्मक और कटाक्षात्मक है जिसमें छोटी–छोटी गलियाँ मन के संकुचन का प्रतीक है और बड़ी–बड़ी कारें बाह्य दिखावे का। कवि के शब्दों में :–

खूब रिश्ते जोड़े निभाये बस थौड़े
भूल गए सीमा, रिश्तों की गरिमा
सूख गए जैसे स्नेह के धारे
छोटी–छोटी गलियाँ बड़ी–बड़ी कारें।

इस के अतिरिक्त प्रस्तुत रचना में आम जीवन की अन्य समस्याएँ भी व्यापक संवेदना के साथ प्रकट होती हैंः–

पानी की किल्लत रोज नई जिल्लत,
+ + + +
जरूरत न क्रेज फिर भी सीवरेज
+ + + + +
नेता के धन्धे, चन्दे के फन्दे

जैसी व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ भी अत्यंत प्रभावी व महत्त्वपूर्ण है। 'डिस्पोजेबल ग्लॉस' भी इसी प्रकार की एक व्यंग्य और कटाक्ष की रचना है। जिसमें कवि ने वर्तमान युग के युवक–युवतियों के प्रेम दिखावे पर कटाक्ष कर बताया है कि आजकल प्रेम भी आर्थिक स्थिति के आधार पर निर्धारित होने लगा है। जिसमें केवल माँसलता और वासना है, सच्चे प्रेम का अभाव है। केवल शारीरिक सम्बन्धों को ही प्रेम मानने की गलत प्रवृत्ति समाज में बढ़ती जा रही है।

इन सब के अतिरिक्त प्रस्तुत संग्रह में कुछ रचनाएँ ऐसी हैं जो रचनाकार की नारी के प्रति संवेदना और उसकी अस्मिता के साथ–साथ माता–पिता, और पारिवारिक आदर्शों को लेकर चलती है; तथा उन आदर्शों के प्रति हमें नैतिक जिम्मेदार बनने की प्रेरणा देती है। संग्रह की 'माँ', 'बाऊजी', 'पिता', 'तुम और मैं' जैसी रचनाएँ इसी आदर्श की श्रेणी में मानी जा सकती हैं।

सारांशतः अधिक विस्तार में न जाकर प्रस्तुत काव्य संग्रह के विषय में कहा जा सकता है कि प्रवृत्तियों की दृष्टि से विषय पक्ष में असन्तोष, अस्वीकृति, और विद्रोह का स्वर इन कविताओं में उभरने के बाद भी इन्हें उस प्रकार की रचनाएँ नहीं माना जा सकता जो भूतकाल में नई कविता के पश्चात् विभिन्न छिट–पुट आन्दोलनों के रूप में चर्चित हुई थी। क्योंकि कवि प्रदीप की इन कविताओ में उक्त भावनाओं के साथ–साथ भाषा में मर्यादा की जो संयमशीलता दृष्टिगत है वह बिरले रचनाकारों में ही होती है। शालीनता और मर्यादा के साथ जन प्रचलित लोक भाषा की शब्दावली में सामाजिक, राजनैतिक आर्थिक विसगंतियों के प्रति आक्रोश को सहजता से प्रकट करना इन रचनाओं की सबसे बड़ी विशेषता है। कहना न होगा कि कोई भी रचनाकार जब अपनी रचना की अभिव्यक्ति करना चाहता है तो उसका उद्देश्य अपनी भावनाओं को उसी रूप में प्रकट करना होता है जिस रूप में रचनाकार ने स्वयं उसे भोगा और अनुभव किया है। अपने अन्तर्मन के सौन्दर्य को रचनाकार उसी रूप में प्रकट करना चाहता है। कवि प्रदीप पंवार का यह काव्य संग्रह 'साहित्य सुगंध' उनके अन्तर्मन के सौन्दर्य को प्रकट करने के साथ–साथ समाज को एक नई चेतना से अनुप्राणित करने में भी समर्थ है।

साथ ही शैली की दृष्टि से कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास में नये–नये चलने वाले काव्यान्दोलनों के रूप में जिन्हें 'अकविता', 'अगीत' या ऐसे ही अन्य नाम मिले किन्तु फिर भी वे रचनाएँ अपने परम्परित बन्धनों को तोड़ नहीं सकी। उस टूटन का वास्तविक रूप रचनाकार की इन रचनाओं में देखा जा सकता है। इसीलिए अपने स्वरूप की दृष्टि से इस प्रकार की रचनाओं का वैज्ञानिक स्वरूप इन कविताओं में देखा जा सकता है। यही कारण है कि ये कविताएँ उनसे कमतर नहीं आँकी जा सकती है। यही प्रस्तुत काव्य संग्रह का मूल भी है और मोल भी।

डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा
प्रोफेसर–राजकीय महाविद्यालय,टोंक